रविवार 5 जनवरी, 2020

विषय — परमेश्वर

स्वर्ण पाठ: I राजा 19 : 11, 12

"और यहोवा पास से हो कर चला, और यहोवा के साम्हने एक बड़ी प्रचण्ड आन्धी से पहाड़ फटने और चट्टानें टूटने लगीं, तौभी यहोवा उस आन्धी में न था; फिर आन्धी के बाद भूंईडोल हूआ, तौभी यहोवा उस भूंईडोल में न था। फिर भूंईडोल के बाद आग दिखाई दी, तौभी यहोवा उस आग में न था; फिर आग के बाद एक दबा हुआ धीमा शब्द सुनाईं दिया।"

उत्तरदायी अध्ययन: **व्यवस्थाविवरण 4 : 1, 29-31, 36, 39**

1 अब, हे इस्राएल, जो जो विधि और नियम मैं तुम्हें सिखाना चाहता हूं उन्हें सुन लो, और उन पर चलो; जिस से तुम जीवित रहो, और जो देश तुम्हारे पितरों का परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है उस में जा कर उसके अधिकारी हो जाओ।

29 परन्तु वहां भी यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को ढूंढ़ोगे, तो वह तुम को मिल जाएगा, शर्त यह है कि तुम अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से उसे ढूंढ़ो।

30 अन्त के दिनों में जब तुम संकट में पड़ो, और ये सब विपत्तियां तुम पर आ पड़ेंगी, तब तुम अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो और उसकी मानना;

31 (क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु ईश्वर है), वह तुम को न तो छोड़ेगा और न नष्ट करेगा, और जो वाचा उसने तेरे पितरों से शपथ खाकर बान्धी है उसको नहीं भूलेगा।

36 आकाश में से उसने तुझे अपनी वाणी सुनाईं कि तुझे शिक्षा दे।

39 सो आज जान ले, और अपने मन में सोच भी रख, कि ऊपर आकाश में और नीचे पृथ्वी पर यहोवा ही परमेश्वर है; और कोई दूसरा नहीं।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 46 : 1-3 (*to 1st* .), 6, 10

1 परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक।
2 इस कारण हम को कोई भय नहीं कि पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिया जाए;
3 क्या समुद्र गरजे और फेन लिया, और पहाड़ उसकी बाढ़ से कांप उठेंगे जे
6 जाति जाति के लोग झल्ला उठे, राज्य राज्य के लोग डगमगाने लगे; वह बोल उठा, और पृथ्वी पिघल गया।
10 चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही भगवान हूँ। मैं जातियों में महान हूं, मैं पृथ्वी भर में महान हूं!

2. यशायाह 30 : 15 (*to* :), 21

15 प्रभु यहोवा, इस्राएल का पवित्र यों कहता है, लौट आने और शान्त रहने में तुम्हारा उद्धार है; शान्त रहते और भरोसा रखने में तुम्हारी वीरता है।
21 और जब कभी तुम दाहिनी वा बाईं ओर मुड़ने लगो, तब तुम्हारे पीछे से यह वचन तुम्हारे कानों में पड़ेगा, मार्ग यही है, इसी पर चलो।

3. निर्गमन 20 : 1, 2

1 तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे,
2 कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया है॥

4. निर्गमन 23 : 20-26

20 सुन, मैं एक दूत तेरे आगे आगे भेजता हूं जो मार्ग में तेरी रक्षा करेगा, और जिस स्थान को मैं ने तैयार किया है उस में तुझे पहुंचाएगा।
21 उसके साम्हने सावधान रहना, और उसकी मानना, उसका विरोध न करना, क्योंकि वह तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा; इसलिये कि उस में मेरा नाम रहता है।
22 और यदि तू सचमुच उसकी माने और जो कुछ मैं कहूं वह करे, तो मैं तेरे शत्रुओं का शत्रु और तेरे द्रोहियों का द्रोही बनूंगा।

23 इस रीति मेरा दूत तेरे आगे आगे चलकर तुझे एमोरी, हित्ती, परज्जी, कनानी, हिब्बी, और यबूसी लोगों के यहां पहुंचाएगा, और मैं उन को सत्यनाश कर डालूंगा।
24 उनके देवताओं को दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना, और न उनके से काम करना, वरन उन मूरतों को पूरी रीति से सत्यानाश कर डालना, और उन लोगों की लाटों के टुकड़े टुकड़े कर देना।
25 और तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, तब वह तेरे अन्न जल पर आशीष देगा, और तेरे बीच में से रोग दूर करेगा।
26 तेरे देश में न तो किसी का गर्भ गिरेगा और न कोई बांझ होगी; और तेरी आयु मैं पूरी करूंगा।

5. निर्गमन 33 : 1, 9-11 (*to 1st* .), 12 (*to 1st* ,), 13, 14

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, तू उन लोगों को जिन्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है संग ले कर उस देश को जा, जिसके विषय मैं ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से शपथ खाकर कहा था, कि मैं उसे तुम्हारे वंश को दूंगा।
9 और जब मूसा उस तम्बू में प्रवेश करता था, तब बादल का खम्भा उतर के तम्बू के द्वार पर ठहर जाता था, और यहोवा मूसा से बातें करने लगता था।
10 और सब लोग जब बादल के खम्भे को तम्बू के द्वार पर ठहरा देखते थे, तब उठ कर अपने अपने डेरे के द्वार पर से दण्डवत करते थे।
11 और यहोवा मूसा से इस प्रकार आम्हने-साम्हने बातें करता था, जिस प्रकार कोई अपने भाई से बातें करे।
12 और मूसा ने यहोवा से कहा।
13 और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो मुझे अपनी गति समझा दे, जिस से जब मैं तेरा ज्ञान पाऊं तब तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे। फिर इसकी भी सुधि कर कि यह जाति तेरी प्रजा है।
14 यहोवा ने कहा, मैं आप चलूंगा और तुझे विश्राम दूंगा।

6. व्यवस्थाविवरण 34 : 10

10 और मूसा के तुल्य इस्राएल में ऐसा कोई नबी नहीं उठा, जिस से यहोवा ने आम्हने-साम्हने बातें कीं।

7. नीतिवचन 3 : 5, 6

5 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।
6 उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।

8. यिर्मयाह 23 : 5, 6, 18, 23, 24, 29

5 यहोवा की यह भी वाणी है, देख ऐसे दिन आते हैं जब मैं दाऊद के कुल में एक धर्मी अंकुर उगाऊंगा, और
वह राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा, और अपने देश में न्याय और धर्म से प्रभुता करेगा।
6 उसके दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे, और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे: और यहोवा उसका नाम यहोवा
"हमारी धार्मिकता" रखेगा।
18 भला कौन यहोवा की गुप्त सभा में खड़ा हो कर उसका वचन सुनने और समझने पाया है?
23 यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं ऐसा परमेश्वर हूँ, जो दूर नहीं, निकट ही रहता हूँ?
24 फिर यहोवा की यह वाणी है, क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है, कि मैं उसे न देख सकूं? क्या
स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं?
29 यहोवा की यह भी वाणी है कि क्या मेरा वचन आग सा नहीं है? फिर क्या वह ऐसा हथौड़ा नहीं जो पत्थर
को फोड़ डाले?

9. यूहन्ना 8 : 1, 2

1 परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया।
2 और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।

10. यूहन्ना 10 : 1-10, 27, 28 (और वे)

1 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु और किसी ओर से
चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है।
2 परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है।
3 उसके लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेंड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले
लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है।
4 और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उन के आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके
पीछे पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं।
5 परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जाएंगी, परन्तु उस से भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानती।
6 यीशु ने उन से यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे न समझे कि ये क्या बातें हैं जो वह हम से कहता है॥
7 तब यीशु ने उन से फिर कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि भेड़ों का द्वार मैं हूं।
8 जितने मुझ से पहिले आए; वे सब चोर और डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उन की न सुनी।
9 द्वार मैं हूं: यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और
चारा पाएगा।
10 चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं
इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।
27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।

28 ....और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 587 : 5-8

परमेश्वर। मैं जो महान हूं; सर्व-ज्ञान, सर्व-दर्शन, सर्व-कार्य, सर्व-ज्ञान, सर्व-प्रिय और शाश्वत; सिद्धांत; मन; अन्त: मन; आत्मा; जिंदगी; सत्य; प्रेम; सभी पदार्थ; बुद्धि।

2. 465 : 16-6

सवाल. — क्या एक से अधिक भगवान या सिद्धांत हैं?

उत्तर। — वहाँ नही है। सिद्धांत और उसका विचार एक है, और यह एक ईश्वर, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी होने के नाते है, और उसका प्रतिबिंब मनुष्य और ब्रह्मांड है। ओमनी को लैटिन विशेषण के संकेत से अपनाया गया है। इसलिए भगवान सभी-शक्ति या सामर्थ्य, सभी-विज्ञान या सच्चे ज्ञान, सभी-उपस्थिति को जोड़ती है। क्रिश्चियन साइंस की विभिन्न अभिव्यक्तियाँ माइंड को दर्शाती हैं, कभी भी एक सामग्री नहीं है, और एक सिद्धांत है।

3. 72 : 2-3

मनुष्य का दिव्य सिद्धांत अमर भाव से बोलता है।

4. 308 : 14-15

आत्मा से प्रेरित पितृपुरुषों ने सत्य की आवाज सुनी, और भगवान के साथ सचेत रूप से बात की जैसे कि आदमी आदमी के साथ बात करता है।

5. 78 : 17-20

यदि आत्मा सभी जगह व्याप्त है, तो उसे संदेशों के प्रसारण के लिए कोई भौतिक विधि नहीं चाहिए। आत्मा को सर्वव्यापी होने के लिए न तो तारों की जरूरत होती है और न ही बिजली की।

6. 117 : 6-19, 24-28

ईश्वर आत्मा है; इसलिए आत्मा की भाषा अवश्य है, और आध्यात्मिक है। क्रिश्चियन साइंस सुप्रीम होने या उनकी अभिव्यक्ति के लिए कोई भौतिक प्रकृति और महत्व नहीं देता है; अकेले मनुष्य ऐसा करते हैं। परमेश्वर की आवश्यक भाषा, मार्क की सुसमाचार के अंतिम अध्याय में नई भाषा के रूप में बोली जाती है, जिसका आध्यात्मिक अर्थ "निम्नलिखित दृष्टिकोण" से प्राप्त होता है।

कान न सुने, न ही ओठ बोले, आत्मा की शुद्ध भाषा। हमारे मास्टर ने उपमा और दृष्टान्तों द्वारा आध्यात्मिकता सिखाई। एक दिव्य छात्र के रूप में उन्होंने भगवान को मनुष्य के लिए प्रकट किया, चित्रण किया और खुद में जीवन और सत्य का प्रदर्शन किया और बीमार और पापों पर अपनी शक्ति द्वारा।

पाँच भौतिक इंद्रियों से खींचा गया साक्ष्य पूरी तरह से मानवीय कारण से संबंधित है; और सत्य प्रकाश की अपारदर्शिता के कारण, मानव कारण मंद रूप से प्रतिबिंबित होता है और शुल्क यीशु के कार्यों और शब्दों को प्रसारित करता है। सत्य एक रहस्योद्घाटन है।

7. 213 : 16-4

ध्वनि नश्वर विश्वास पर बनी एक मानसिक धारणा है। कान वास्तव में सुनता नहीं है। दिव्य विज्ञान ध्वनि को आत्मा की इंद्रियों के माध्यम से - आध्यात्मिक समझ के माध्यम से प्रकट करता है।

मोजार्ट ने व्यक्त की तुलना में अधिक अनुभव किया। उनकी भव्य सहानुभूति का उत्साह कभी नहीं सुना गया था। वह दुनिया को जानने वाले से परे एक संगीतकार थे। यह बीथोवेन का और भी स्पष्ट रूप से सच था, जो इतनी लंबी आशाहीन बहरी थी। मधुर संगीत की मधुर धुन और उपभेदों में सजग ध्वनि होती है। संगीत सिर और हृदय की लय है। नश्वर मन कई तारों की वीणा है, हाथ के अनुसार या तो कलह या सद्भाव को हतोत्साहित करता है, जो उस पर झाड़ू लगाता है, वह मानव या परमात्मा है।

इससे पहले कि मानव ज्ञान चीजों की झूठी भावना में अपनी गहराई तक डूबा हो, — भौतिक उत्पत्ति में विश्वास करते हैं जो एक मन और अस्तित्व के सच्चे स्रोत को छोड़ देते हैं, — यह संभव है कि सत्य से छापें ध्वनि के रूप में अलग थीं, और वे ध्वनि के रूप में आदिम नबियों के लिए आए थे। यदि सुनने का माध्यम पूर्ण आध्यात्मिक है, तो यह सामान्य और अविनाशी है।

8. 284 : 28-32

क्रिश्चियन साइंस के अनुसार, मनुष्य की एकमात्र वास्तविक भावना आध्यात्मिक है, जो दिव्य मन से निकलती है। विचार ईश्वर से मनुष्य की ओर जाता है, लेकिन न तो संवेदना और न ही रिपोर्ट भौतिक शरीर से मन तक जाती है। अंतर्मन हमेशा ईश्वर से लेकर उसके विचार, मनुष्य तक होता है।

9. 585 : 1-4

कान। तथाकथित कॉर्पोरल इंद्रियों के अंग नहीं, लेकिन आध्यात्मिक समझ के लिए। यीशु ने आध्यात्मिक धारणा का जिक्र करते हुए कहा, "और कान रखते हुए भी नहीं सुनते?" (मरकुस 8:18.)

10. 89 : 18-24

जरूरी नहीं कि मन शैक्षिक प्रक्रियाओं पर निर्भर हो। यह अपने आप में सभी सुंदरता और कविता, और उन्हें व्यक्त करने की शक्ति रखता है। आत्मा, ईश्वर, तब सुनाई देता है जब इंद्रियाँ चुप हो जाती हैं। हम जितना करते हैं उससे कहीं अधिक हम सभी सक्षम हैं। आत्मा का प्रभाव या क्रिया एक स्वतंत्रता प्रदान करती है, जो कि अविवेक की घटनाओं और असभ्य होंठों के उत्साह की व्याख्या करती है।

11. 84 : 3-13, 28-9

प्राचीन पैगंबरों ने आध्यात्मिक दृष्टि से अपनी दूरदर्शिता हासिल की, दृष्टिकोण को शामिल किया, न कि बुराई और गलत तथ्य को दूर करने से दूर किया, — भविष्य की निष्ठा और मानवीय विश्वास के आधार पर भविष्य की भविष्यवाणी करना। जब विज्ञान में पर्याप्त रूप से उन्नत होने की सच्चाई के साथ सामंजस्य स्थापित किया जाता है, तो पुरुष अनैच्छिक रूप से द्रष्टा और भविष्यद्वक्ता बन जाते हैं, जो राक्षसों, आत्माओं, या लोकतंत्रों द्वारा नियंत्रित नहीं होते हैं, लेकिन एक आत्मा द्वारा। यह वर्तमान, दिव्य मन का विचार है, और विचार का जो इस मन के साथ संबंध में है, अतीत, वर्तमान और भविष्य को जानने के लिए।

आत्मा के बारे में हम सभी सही रूप से जानते हैं कि ईश्वर, ईश्वरीय सिद्धांत से आता है, और यह मसीह और ईसाई विज्ञान के माध्यम से सीखा जाता है। यदि इस विज्ञान को अच्छी तरह से सीखा और ठीक से पचा लिया गया है, तो हम सत्य को अधिक सटीक रूप से जान सकते हैं कि खगोलशास्त्री तारों को पढ़ सकते हैं या किसी ग्रहण की गणना कर सकते हैं।

यह माइंड-रीडिंग क्लैरवॉयन्स के विपरीत है। यह आध्यात्मिक समझ की रोशनी है जो आत्मा की क्षमता को प्रदर्शित करती है, भौतिक अर्थ की नहीं। यह आत्मा-बोध मानव मन में तब आता है जब उत्तरार्द्ध दिव्य मन को उपजता है।

इस तरह के अंतर्ज्ञान से पता चलता है कि जो कुछ भी बनता है और सद्भाव को बनाए रखता है, एक को अच्छा करने में सक्षम बनाता है, लेकिन बुराई को नहीं।

12. 85 : 23-24, 30-32

यहूदी और अन्यजातियों में तीव्र शारीरिक संवेदनाएं हो सकती हैं, लेकिन नश्वर लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। ... महान शिक्षक कारण और प्रभाव दोनों जानते थे, जानते थे कि सत्य स्वयं को संप्रेषित करता है लेकिन कभी त्रुटि प्रदान नहीं करता है।

13. 505 : 20-28

आध्यात्मिक भावना आध्यात्मिक अच्छाई की समझ है। समझ वास्तविक और असत्य के बीच सीमांकन की रेखा है। आध्यात्मिक समझ मन, जीवन, सत्य और प्रेम को प्रकट करती है, — और क्रिश्चियन साइंस में ब्रह्मांड का आध्यात्मिक प्रमाण देते हुए, दिव्य भावना को प्रदर्शित करता है।

यह समझ बौद्धिक नहीं है, विद्वानों की प्राप्ति का परिणाम नहीं है; यह प्रकाश में लाई गई सभी चीजों की वास्तविकता है।

14. 559 : 8-16

वैज्ञानिक चिंतन का "हुआ डाउन वर्ड" महाद्वीप और महासागर से लेकर ग्लोब के रिमोटेस्ट बाउंड तक पहुंचता है। सत्य की अश्रव्य आवाज मानव मन के लिए है, "जब एक शेर दहाड़ता है।" यह रेगिस्तान में और भय के अंधेरे स्थानों में सुनाई देता है। यह बुराई के "सात आवाज़" पैदा करता है, और गुप्त अव्यवस्थाओं की पूरी डायपसन उच्चारण करने के लिए उनकी अव्यक्त ताकतों को रोकता है। तब सत्य की शक्ति प्रदर्शित होती है, — त्रुटि के विनाश में प्रकट किया जाता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6